सी एस आई आर समाचार

वर्ष 25 अंक 3 मार्च 2008

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

भारत और फ्रांस ने धारणीय रसायन विज्ञान (सस्टेनेबल कैमिस्ट्री) पर एक संयुक्त अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना की

भारत के वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद तथा फ्रेंच नेशनल साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएनआरएस) ने अन्तरापृष्ठीय धारणीय रसायन विज्ञान पर संयुक्त अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना के लिए अनुबन्ध किया है। श्रीमती कैथरीन ब्रेचिग्नेक, अध्यक्ष, सीएनआरएस तथा प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने श्रीमती वेलेरी पेक्रेस, फ्रांसीसी उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान मंत्री तथा श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथां प्रौद्योगिकी व भूविज्ञान मंत्री, भारत सरकार की उपस्थिति में 25 जनवरी 2008 को सीएसआईआर-सीएनआरएस ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इंडो-फ्रेंच भागीदारी में मील के पत्थर के रूप में संयुक्त अनुसंधान प्रयोगशाला निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान भागीदारी केन्द्रित करेगी-

- हरित रसायन (ग्रीन कैमिस्ट्री) कैंसर तथा स्नायु विकार के उपचारात्मक एजेन्ट के रूप में लक्षित
- प्रोटीन अंतःक्रिया, जिनका लक्ष्य वैकल्पिक औषधि/जैविक प्रणाली होगा।

सीएसआईआर की एक प्रयोगशाला भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद, कार्यक्रम का कार्यान्वयन सीएनआरएस लैबोरेटरी फॉर मॉलीक्युलर कैमिस्ट्री ऑन मॉलीक्युलर फोटोनिक्स तथा फ्रांस की यूनिवर्सिटी ऑफ रेनेस फ्रांस के साथ भागीदारी में करेगा।

सीएसआईआर-सीएनआरएस सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए

राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान स्थापना दिवस

डॉ. पी. रामाराव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, अध्यक्ष, शासी परिषद इंटरनैशनल रिसर्च सेंटर फॉर पाउडर मेटलर्जी एण्ड न्यू मेटीरियल्स (एआरसीआई), हैदराबाद ने 46वां रा.भू.भौ.अ.सं. स्थापना दिवस व्याख्यान दिया जिसका शीर्षक था- **भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रबंध; क्या कुछ प्रभाव है?** इस अवसर पर श्री वी.के. सिबाल, महानिदेशक, हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय मुख्य अतिथि थे।

डॉ. राव ने कहा कि हाल के समय तक योजनाबद्ध आर्थिक विकास को आधार प्रदान करने हेतु वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए दीर्घकालिक योजना तैयार करने के लिए कोई रूपरेखा नहीं थी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास के लिए भारी बजट के साथ कई कार्यक्रम हैं लेकिन ग्रामीण विकास के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान की अनुप्रयुक्ति वादविवाद का विषय है। इस संदर्भ में उन्होंने 1970 में करीमनगर में आरंभ की गई एक प्रायोगिक परियोजना के बारे में उल्लेख किया। विभिन्न विभागों के बीच समन्वय के संदर्भ में उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग को अन्य मंत्रालयों के साथ जोड़ने के लिए एक स्पष्ट व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस संदर्भ में बताया कि हम अकेले काम करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। बेहतर परिणामों के लिए संपर्क स्थापित करने तथा क्षेत्रों की प्राथमिकता पहचानने की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान तथा आर्थिक विकास को जोड़ने के लिए एकीकृत रास्ता अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। मूलभूत अनुसंधान एवं विकास को समर्थन दे रहे औषधीय उद्योगों की उन्होंने प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अनुसंधान कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने हेतु तुरंत उपाय होने चाहिए। अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में युवा पीढ़ी के योगदान पर भी उन्होंने प्रकाश डाला।

श्री वी.के. सिबाल ने समन्वय के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक उद्योग तथा सह अनुसंधान अभिकरणों के साथ लगातार संपर्क में रहना चाहिए और उनकी आवश्यकताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय से अपील की कि उद्योगों के साथ संपर्क स्थापित कर समस्याओं को समझने की कोशिश करके ऐसी समस्याओं के लिए समाधानोन्मुख अनुसंधान करें। राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान तथा हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के बीच वैज्ञानिकों के नियमित विनिमय को सरल बनाने का प्रस्ताव दिया। हाइड्रोकार्बन अन्वेषण में राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान की भूमिका की सराहना की।

डॉ. वि.प्र. डिमरी, निदेशक, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान ने अपनी अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संस्थान वैश्विक स्तर पर अनुसंधान साइटेशन का शीर्षस्थ एक प्रतिशतता में है। उन्होंने संस्थान की भावी समाजोपयोगी परियोजनाओं और मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों के बारे में बताया।

डॉ. वाई.जे. भास्करराव, वैज्ञानिक-जी एवं डॉ. एस. सत्यनारायणा, वैज्ञानिक-जी ने वक्ता और मुख्य अतिथि का आमंत्रित अतिथियों तथा स्टॉफ से परिचय कराया। डॉ. एस.एन. प्रसाद, वैज्ञानिक-जी ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

तत्पश्चात् डॉ. पी. रामाराव ने सुनामी चेतावनी प्रणाली के लिए भूकम्पीय वेधशाला जो राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान के परिसर में स्थापित है, का उद्घाटन किया। यह भारत में स्थापित 17 चेतावनी प्रणालियों का एक अंग है।

डॉ. चन्द्रशेखर भारत सरकार के अपर सचिव बने

केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी, के निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' **डॉ. चन्द्रशेखर** को सीएसआईआर, नई दिल्ली, द्वारा भारत सरकार के अपर सचिव के पद पर पदोन्नत किया गया है। वीएलएसआई तथा माइक्रोइलेक्ट्रॉनिकी के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त देश के प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. चन्द्रशेखर की यह पदोन्नति मेरिट के आधार पर की गई है तथा उन्होंने 15 फरवरी 2008 को इस पद पर कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

डॉ. चन्द्रशेखर ने इससे पूर्व 31 अक्टूबर, 2003 को सीरी, पिलानी के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। 12 अक्टूबर, 1951 को जन्मे डॉ. चन्द्रशेखर ने 1969 में पंजाब विश्वविद्यालय से बीएससी तथा 1971 व 1975 में बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (बिट्स), पिलानी, से भौतिक विज्ञान में क्रमशः एमएससी व पीएचडी की उपाधियां प्राप्त कीं। वर्ष 1971 से 1975 तक बिट्स, पिलानी में सीएसआईआर की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति तथा वर्ष 1975 से 1977 तक सीरी, पिलानी, में सीएसआईआर की वरिष्ठ एवं पोस्ट डॉक्टरल अध्येतावृत्ति प्राप्त करने के बाद उन्होंने सीरी, पिलानी में वैज्ञानिक-बी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

डॉ. चन्द्रशेखर ने मार्च-सितम्बर, 1980 में फ्रांस के ईएफसीआईएस में कम्प्यूटर आधारित संरचनाओं के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अध्ययन के लिए **यूएनडीपी फैलो** के रूप में कार्य किया। इसी प्रकार मार्च, 1982 में बर्कले विश्वविद्यालय, अमेरिका में माइक्रोचिप की कम्प्यूटर

आधारित संरचनाओं के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अध्ययन के लिए यूएनडीपी फैलो के रूप में कार्य किया। नवम्बर 85 से मई, 1986 तक यूसीएल, बेल्जियम में वीएलएसआई परिपथों के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अध्ययन के लिए यूएनडीपी फैलो के रूप में भी कार्य किया। मई-जून, 1994 में यूसीएल, बेल्जियम में एनॉलॉग एवं डिजिटल आईसी डिज़ाइन के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अध्ययन के लिए यूएनडीपी फैलो के रूप में कार्य किया। वर्ष 1986 में उन्हें **यूनेस्को/रोस्टस्का युवा वैज्ञानिक पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

डॉ. चन्द्रशेखर की रुचि के शोध क्षेत्रों में वीएलएसआई डिज़ाइन एवं डिज़ाइन मेथोडॉलाजीज़, एनॉलॉग आईसी डिज़ाइन एवं मिश्रित सिग्नल डिज़ाइन, प्रोसेसरों के डिज़ाइन एवं उनके विशिष्ट अनुप्रयोग, वीएलएसआई के लिए कम्प्यूटर आधारित डिज़ाइन, एमओएस युक्तियों की भौतिकी एवं प्रतिरूपण तथा वीएलएसआई तन्त्रों के अनुप्रयोग इत्यादि सम्मिलित हैं।

डॉ. चन्द्रशेखर की वैज्ञानिक उपलब्धियों में 1986 में यूएनडीपी के अन्तर्गत सर्वप्रथम विभिन्न आवृत्तियों के एसी ड्राइव्स के PWM कण्ट्रोल के लिए देश की पहली पूर्ण समर्पित 16 बिट प्रोसेसर चिप का निर्माण (यह चिप अन्तरराष्ट्रीय संरचनात्मक सुविधा से बनाई गई), वर्ष 1991-92 में सी-डॉट के लिए सीरियल डाटा कम्यूनिकेशन कंट्रोलर VLSI सेमीकंडक्टर कस्टम चिप का डिज़ाइन (जिसका सी-डॉट के RAX तथा MAX टेलिफोन स्विचों में उपयोग किया गया), वर्ष 1994-96 में इलेक्ट्रॉनिकी विभाग की प्रायोजित परियोजनाओं के अन्तर्गत समकालीन मोटोरोला 68010 प्रोसेसर चिप के समरूप देश के प्रथम सामान्य उद्देश्यीय माइक्रोप्रोसेसर का अभिकल्पन, यूसीएल (बेल्जियम) के सहयोग से औद्योगिक विशिष्ट अनुप्रयोग एकीकृत परिपथों का अभिकल्पन एवं निर्माण, राष्ट्रीय मानक ब्यूरो (अमेरिका) के सहयोग से परीक्षण संरचनाओं एवं एकीकृत परिपथों की विभिन्न योजनाओं का विकास तथा इलेक्ट्रोमाइग्रेशन अध्ययन, सीएसआईआर-केएफए कार्यक्रम के अन्तर्गत TH-डर्मस्टैड (जर्मनी) के साथ कम्प्यूटर आधारित डिज़ाइन उपकरणों एवं वीएलएसआई डिज़ाइन उपकरणों एवं वीएलएसआई डिज़ाइन के क्षेत्र में उन्नत शोध कार्य सम्मिलित हैं।

डॉ. चन्द्रशेखर वर्ष 1994 से **VLSI डिज़ाइन के लिए VHDL पर आधारित नई उच्च उत्पादकता वाली**

हार्डकेयर डिज़ाइन की आधुनिकतम प्रौद्योगिकी का सम्मेलनों, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, परामर्श सेवाओं तथा आमंत्रित पाठ्यक्रमों के माध्यम से पूरे देश में प्रचार-प्रसार करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। आजकल वे दो विशिष्ट अनुप्रयोग वीएलएसआई प्रोसेसरों तथा हिन्दी सामग्री को वाणी में बदलने के लिए इन प्रोसेसरों की इम्बेडेड प्रणाली के अभिकल्पन पर कार्य कर रहे हैं।

देश में सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिकी एवं वीएलएसआई डिज़ाइन के क्षेत्र में एम.ई. डिग्री कार्यक्रमों को प्रारंभ कराने में डॉ. चन्द्रशेखर की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उनके मार्गदर्शन में बिट्स, पिलानी तथा सीरी के आपसी सहयोग से वर्ष 1989-90 में एम.ई. (माइक्रोइलेक्ट्रॉनिकी) डिग्री कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इसी कार्यक्रम से प्रेरित होकर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों तथा राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के लिए विशिष्ट जनशक्ति विकास हेतु वीएलएसआई डिज़ाइन एवं संबंधित सॉफ्टवेयर नामक बहुसांस्थानिक परियोजना की संकल्पना तथा इसे चालू कराने में डॉ. चन्द्रशेखर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में डॉ. चन्द्रशेखर मानव संसाधन विकास की एक परियोजना के क्रियान्वयन पर कार्यरत हैं जिसके अन्तर्गत माइक्रोइलेक्ट्रॉनिकी क्षेत्र में प्रतिवर्ष 1000 छात्र एमई/एमटेक कर सकेंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, एआईसीटीई तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग/परामर्श से सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय इस परियोजना पर कार्य कर रहा है। देश के जाने-माने शोध संस्थानों, शिक्षण संस्थानों, उद्योगों आदि के अनुरोध पर डॉ. चन्द्रशेखर समय-समय पर विभिन्न व्याख्यान-मालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों/परामर्श सेवाओं तथा अपने विशेष अनुभवों का लाभ देते रहे हैं। डॉ. चन्द्रशेखर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के विद्युत यांत्रिकी विभाग से अतिथि व्याख्याता के रूप में भी जुड़े रहे हैं।

डॉ. चन्द्रशेखर केन्द्र सरकार के कई विभागों की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे हैं। देश/विदेश की प्रतिष्ठित शोध पत्र-पत्रिकाओं तथा सम्मेलनों में उनके 44 शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने पीएचडी के 4 छात्रों के शोध ग्रंथों, एमई/एमटेक के 90 छात्रों के शोध-प्रबंधों का मार्गदर्शन किया है। वर्तमान में वे पीएचडी छात्रों के शोध-प्रबंधों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

डॉ. चन्द्रशेखर, इंडियन फिजिक्स एसोसिएशन, सेमीकंडक्टर सोसायटी ऑफ इंडिया, इंडो फ्रेंच टेक्निकल एसोसिएशन जैसी संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं तथा आईईटीई के फैलो हैं।

निस्केयर में तकनीकी संचार पर अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली के शिक्षा तथा प्रशिक्षण विभाग द्वारा 10-14 दिसम्बर 2007 के दौरान डेसीडॉक, नई दिल्ली के तत्वाधान में विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के प्रतिभागियों के लिए तकनीकी संचार पर एक अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में व्याख्यान, निदर्शन तथा प्रायोगिक सत्र आयोजित किये गये जिसमें निम्नलिखित पक्ष समाहित थे- तकनीकी संचार प्रक्रिया, तकनीकी संचार की श्रेणियां, डेटा का प्रस्तुतिकरण, लोकप्रिय विज्ञान लेखन तथा संपादन, विज्ञान संचार तथा प्रोडक्शन पहलूओं में होने वाली सामान्य त्रुटियां। पैंतीस प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रतिभागियों ने विषयों के साथ-साथ निस्केयर के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गयी विस्तृत तथा विवरणात्मक सूचना के लिए उनकी भूरि-भूरि सराहना की।

बोगनवेलिया की नयी किस्म जारी

रासायनिक उत्परिवर्तनों द्वारा उत्प्रेरित **बोगनवेलिया** की बहुनिपत्र वाली कृषिजोप जाति (कल्टीवर) लोस **बेनोस वेरिगेटा-जयन्ती** को अभी हाल ही में राष्ट्रीय वनस्पति विज्ञान अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई), लखनऊ द्वारा जारी किया गया। इस असंगत शाखा को 0.02 प्रतिशत ईएमएस से उपचारित एक पौधे से विलगित करके बहुगुणित किया गया तथा प्रवर्धित किया गया। पत्ती के एक कोने से लेकर सम्पूर्ण पत्ती तक में क्लोरोफिल शबलता के आकार में भिन्नता होती है। यद्यपि उत्परिवर्तनों वाली पत्ती के निपत्रों के रंग में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया। यह उत्परिवर्तित पौधा पत्तियों में क्लोरोफिल शबलता के पैटर्न में गामा किरणों से उत्प्रेरित उत्परिवर्तन **लोस बेनोस वेरीगेटा** से पूर्णतः भिन्न है।

लोस बेनोस वेरिगेटा-जयन्ती

वांतरिक्ष विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

वर्ष 1959 में स्थापित राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोशालाएं (एनएएल), बंगालुरू वर्ष 2008-09 को स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में मना रही है। एनएएल के स्वर्ण जयन्ती समारोह के एक भाग के रूप में वांतरिक्ष विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर नवीनतम जानकारी का आदान-प्रदान करने के लिए एक फोरम की स्थापना करने तथा वैश्विक स्तर पर प्रौद्योगिक नवीनताओं को प्राप्त करने की नेटवर्किंग सम्भावनाओं पर विचार करने के लिए एक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

इस सम्मेलन का उद्देश्य अन्तरराष्ट्रीय आर एण्ड डी संगठनों, शैक्षिक संस्थाओं तथा औद्योगिक एजेन्सियों को अपने नवीनतम उपलब्धियों को प्रस्तुत करने तथा परस्पर सहक्रियाओं की संभावनाओं की खोज करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। यह एनएएल की वातंरिक्ष प्रौद्योगिकियों को भी प्रदर्शित करेगा। इस सम्मेलन में कीनोट अभिभाषण, आमंत्रित वार्ताएं तथा शोधपत्रों के अतिरिक्त उद्योगों के प्रदर्शों की प्रदर्शनियां भी सम्मिलित होंगी।

इस **इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन एयरोस्पेस साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी** पर एक वेबसाइट का डॉ. ए.आर. उपाध्या, निदेशक, एनएएल द्वारा नवम्बर में शुभारम्भ किया गया। इस वेबसाइट का पता है- http://www.nal.res.in/nal50/incast.

एनबीआरआई ने कफ-निरोधक हर्बल संरूपण के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किये

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई), लखनऊ ने मैसर्स टोरल हर्बल लखनऊ के साथ कफ प्रतिरोधक हर्बल संरूपण के हस्तांतरण के लिए एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किये।

आईआईसीबी में एनआईपीईआर कोलकाता का शुभारम्भ

राष्ट्रीय औषध-निर्माण शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर), मोहाली औषध निर्माण विज्ञान में अग्रवर्ती अध्ययन तथा अनुसंधान में उत्कृष्टता के एक केन्द्र होने के अपने उद्घोषित उद्देश्य के साथ प्रथम राष्ट्रीय स्तर का संस्थान है। भारत सरकार द्वारा संसदीय अधिनियम (एनआईपीईआर एक्ट 1998 तथा एनआईपीईआर संशोधित अधिनियम 2007) के द्वारा इसे एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया है। नेशनल मैन्युफैक्चरिंग कम्पेटीवनेस काउंसिल (एनएमसीसी), 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत योजना आयोग द्वारा स्थापित औषधि तथा भेषजीय कार्यकारी दल तथा रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय की स्थायी संसदीय समिति ने देश के विभिन्न भागों में अतिरिक्त एनआईपीईआर जैसे संस्थानों की स्थापना के लिए संस्तुति की है। कुल मिलाकर छह ऐसे संस्थान अहमदाबाद, कोलकाता, हाजीपुर, हैदराबाद, गुवाहाटी तथा रायबरेली प्रत्येक में एक-एक 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विभिन्न मार्गदर्शक संस्थानों के सक्रिय मार्गदर्शन में की जा रही है। अहमदाबाद, हैदराबाद, कोलकाता तथा हाजीपुर में शैक्षिक सत्र 2007-08 से कक्षाएं आरम्भ हो रही हैं।

श्री रामविलास पासवान, केन्द्रीय रसायन तथा उर्वरक व इस्पात मंत्री, स्थापना शिला का शिलान्यास करते हुए (साथ में खड़े हैं) श्री बुद्धदेव भट्टाचार्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल; श्री सुधांगशुसील, संसद सदस्य; डॉ. सुजान चक्रवर्ती, संसद सदस्य तथा श्री बी.के. हंडीक्यू, रसायन तथा उर्वरक तथा संसदीय मामलों के राज्यमंत्री

एनआईपीईआर जैसे शैक्षिक तथा अनुसंधान संस्थान बहुआयामी भूमिका निभाते हैं। प्रशिक्षित जनशक्ति तथा ज्ञान के सृजन के द्वारा यह उद्योगों के लिए नये आकर्षण पैदा करते हैं तथा स्वयं में नये उद्योगपतियों का सृजन भी करते हैं। अतः एक स्वनियंत्रित सम्पदा-ज्ञान-जनशक्ति चक्र की रचना हो जाती है। भारत में भेषजीय उद्योग सामान्य व्यापार से नवीन औषधि खोज की ओर अग्रसर हो रहा है। उद्योगों को भविष्य के विकास तथा उत्तरजीविता के लिए छोटे आपूर्तिकर्त्ताओं के स्थान पर आविष्कारकों के रूप में तत्काल स्थानान्तरण की आवश्यकता है। इस स्थानान्तरण की सफलता न केवल नवीन औषधि आविष्कार कार्यक्रम पर निर्भर है अपितु ज्ञान तथा प्रौद्योगिकियों को उत्पादित करने में आगे बढ़ रही है जिन पर भविष्य के उपचार आधारित होंगे। इस सफलता के लिए रसायन विज्ञान जीवविज्ञान, इन्फॉर्मेटिक्स तथा फार्मास्युटिकल सांइस का परस्पर समन्वयन अनिवार्य है तथा यह अभी स्थापित किये जा रहे एनआईपीईआर को फोकस के रूप में केन्द्रित करेंगे।

महानिदेशक, सीएसआईआर ने भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान (आईआईसीबी) कोलकाता को एनआईपीईआर, कोलकाता के लिए

प्रो. एस. रॉय, निदेशक, आईआईसीबी; केन्द्रीय मंत्री, श्री रामविलास पासवान को स्मृतिचिह्न भेंट करते हुए

सलाहकार संस्थान के रूप में कार्य करने के लिए कहा है। आईआईसीबी को भारत सरकार की 6 सितम्बर 2007 की अधिसूचना के द्वारा आईआईसीबी में नया एनआईपीईआर, कोलकाता में आरम्भ करने के लिए सलाहकार संस्थान घोषित किया गया है। केन्द्रीय रसायन तथा उर्वरक व इस्पात मंत्री श्री रामविलास पासवान ने आईआईसीबी में 5 नवम्बर 2007 को एनआईपीईआर, कोलकाता का शुभारम्भ किया।

शहर के बाहरी हिस्से में बेरुईपुर नामक स्थान पर नये संस्थान की स्थापना होने तक आईआईसीबी में कक्षाएं आयोजित की जाएगी। आईआईसीबी एनआईपीईआर को अवसंरचना तथा संकाय सदस्य उपलब्ध कराएगा। एनआईपीईआर, कोलकाता वर्ष 2007-08 से फार्मास्युटिकल सांइस तथा प्रौद्योगिकी में विशिष्ट तथा अन्तर अनुशासनिक पाठ्यक्रम आरम्भ करेगा। आरम्भ में तीन स्नातकोत्तर कार्यक्रम यथा चिकित्सा, रसायन विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद तथा फार्माकोइन्फॉर्मेटिक्स इस संस्थान द्वारा आयोजित किये जाएंगे। यह एक आवासीय संस्थान है जो छात्रावास सुविधा प्रदान करता है जोकि अभी आईआईसीबी द्वारा प्रबन्धित की जा रही है। यह छात्रों को एमएस (फार्मा) में दाखिला देगा तथा वर्तमान में यहां अब तक 30 छात्र स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश ले चुके हैं। छात्रों की संख्या दो वर्ष के पाठ्यक्रम के लिए प्रतिवर्ष बढ़ाई जा सकती है। इस शैक्षिक सत्र के लिए कक्षाएं 6 नवम्बर से आरम्भ की जा चुकी हैं।

प्रो. एस. के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर स्मृतिचिह्न प्राप्त करते हुए

एनआईपीईआर, कोलकाता का उद्घाटन करते हुए श्री पासवान ने कहा, फार्मास्युटिकल सेक्टर एक महत्वपूर्ण सेक्टर है जिसमें दक्ष जनशक्ति का अभाव है तथा इसलिए सरकार ने देश में एनआईपीईआर की संख्या में बढ़ोत्तरी का निर्णय लिया है। तदनुसार वर्तमान वर्ष में चार नये एनआईपीईआर कार्य करना आरम्भ कर देंगे। उन्होंने सूचित किया कि यद्यपि यहां एनआईपीईआर, आईआईसीबी से परिचालित किया जा रहा है परन्तु इसके लिए राज्य सरकार द्वारा बेरुईपुर में भूमि का आबंटन कर दिया गया है। उन्होंने पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री का एनआईपीईआर के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए आभार व्यक्त किया तथा

एनआईपीईआर कोलकाता के विद्यार्थी अतिथियों के साथ मंच पर

इस उद्देश्य के लिए और अधिक भूमि हेतु निवेदन किया। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस समारोह में रसायन तथा उर्वरक तथा संसदीय मामलों के राज्यमंत्री श्री बिजोय कृष्णा हंडीक्यू, संसद सदस्य तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की संसदीय स्थायी समिति के सदस्य डॉ. सूजान चक्रवर्ती तथा श्री सुधांगशु सील, संसद सदस्य के अतिरिक्त अन्य बहुत से गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित थे जिसमें डॉ. समीर कुमार ब्रह्मचारी, पूर्व निदेशक, आईजीआईबी तथा वर्तमान में महानिदेशक सीएसआईआर, प्रो. पी. रामाराव, निदेशक, एनआईपीईआर, मोहाली, श्री पुरनेन्दु चटर्जी, जाने-माने उद्योगपति, श्री सव्यसांची सेन, सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग, पश्चिम बंगाल तथा बहुत-सी प्रयोगशालाओं के निदेशक व जाधवपुर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार सम्मिलित थे।

पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्जी ने कहा भारत लगभग सभी उपचारात्मक श्रेणियों के लिए औषधि का उत्पादन करता है परन्तु यहां फार्मास्युटिकल अनुसंधान में प्रशिक्षित जनशक्ति का नितान्त अभाव है। एनआईपीईआर इस मांग की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होगा।

उन्होंने सूचित किया कि हल्दिया में आने वाले रासायनिक तथा पेट्रोकैमिकल केन्द्र फार्मास्युटिकल उद्योग की सहायता करेंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पश्चिम बंगाल शीघ्र ही राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के समूह वाला राज्य बन जाएगा। प्रथम जैवप्रौद्योगिकी पार्क जोकि खड़गपुर में स्थापित किया जा रहा है, आने वाले 2-3 वर्षों में आईआईटी खड़गपुर तथा यूनिवर्सिटी ऑफ बर्कले, केलिफोर्निया की सहायता से वास्तविकता में तब्दील हो जाएगा।

प्रो. सिद्धार्थ रॉय, निदेशक, आईआईसीबी ने अपने स्वागत सम्बोधन में अन्वेषण प्रभावी फार्मास्युटिकल उद्योगों की प्रगति तथा प्रौद्योगिक क्रान्ति में तीव्रता लाने के लिए ऐसे संस्थानों के सृजन की अनिवार्यता के विषय में अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. सुजान चक्रवर्ती ने कहा कि एनआईपीईआर भारत में हमारे ज्ञान, हमारी जैवविविधता, औषधि निर्माण के कार्यप्रणाली की उपयोगिता में एक नोडल एजेन्सी का कार्य करेगा।

फार्मास्युटिकल सेक्टर एक महत्वपूर्ण सेक्टर है जिसमें दक्ष जनशक्ति का अभाव है तथा इसलिए सरकार ने देश में एनआईपीईआर की संख्या में बढ़ोत्तरी का निर्णय लिया है। तदनुसार वर्तमान वर्ष में चार नये एनआईपीईआर कार्य करना आरम्भ कर देंगे

श्री हंडीक्यू ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि न्यूनतम साझा कार्यक्रम के राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल नीति के अन्तर्गत केन्द्र सरकार जीवनरक्षक तथा अनिवार्य दवाईयों का सस्ते दामों पर उपलब्ध कराने के लिए कृतसंकल्प है। एनआईपीईआर फार्मास्युटिकल उद्योग की तीव्र वृद्धि तथा औषधियों के निर्यात में एक शैक्षिक तथा अनुसंधान संस्थान के रूप में कार्य करेगा।

इससे पहले, रसायन तथा पेट्रोकेमिकल विभाग के संयुक्त सचिव, श्री गुरदयाल सिंह सन्धू ने अपने परिचयात्मक अभिभाषण में सूचित किया कि राज्य सरकार नये संस्थान की स्थापना के लिए पहले ही भूमि का एक हिस्सा आबंटित कर चुकी है। रसायन तथा पेट्रोकेमिकल विभाग के सलाहकार तथा पूर्व सचिव श्रीमती सतवन्त रेड्डी ने सूचित किया कि एनआईपीईआर-कोलकाता के अतिरिक्त केन्द्र की पांच नए एनआईपीईआर स्थापित करने की योजना है तथा वर्ष 2012 तक इन अतिरिक्त एनईपीईआर में पंजीकरण संख्या 1,200 हो जायेगी। प्रत्येक एनआईईपीईआर को स्थापित करने में केन्द्र लगभग 200 करोड़ रुपये व्यय का निवेश करेगा।

डॉ. असिस बैनर्जी, परियोजना समन्वयक, एनआईपीईआर, कोलकाता के धन्यवाद के साथ समारोह सम्पन्न हुआ। यहां यह निर्दिष्ट करना आवश्यक है कि फार्मास्यूटिकल उद्योग तीव्रता से बढ़ते उद्योगों में से एक है तथा घरेलू विकास में लगभग 10 प्रतिशत तथा निर्यात बाजार में 15 प्रतिशत वृद्धि कर रहा है।

भारत में फार्मा उत्पादन का कुल मूल्य लगभग रु.70,000 करोड़ है। वैश्विक रूप से भारत आज मात्रा में चौथा सबसे बड़ा तथा मूल्य में तेरहवां सबसे बड़ा देश है।

राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार,2006

पहली बार वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के अन्तर्गत एक राष्ट्रीय प्रयोगशाला - राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद से 5 वैज्ञानिकों का राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार 2006 हेतु चयन किया गया।

डॉ. एच.वी. राम्बाबू, वैज्ञानिक 'एफ' को अनुप्रयुक्त भूभौतिकी के क्षेत्र में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2006 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान में अत्याधुनिक बहु-पैरामीटर उच्च विभेदन वायु वाहित भूभौतिकीय सर्वेक्षण सुविधा, जो भारत में इस प्रकार की पहली सुविधा है, की स्थापना करने के लिए दिया गया।

डॉ. आर.के. तिवाड़ी, वैज्ञानिक 'एफ' को महासागर विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2006 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें कुछ महत्वपूर्ण भू-सागर वायुमंडलीय प्रक्रियाओं में चक्र प्रतिमान का पहला मात्रात्मक प्रमाण प्रदान करने तथा खगोलीय परिघटना के साथ महत्वपूर्ण भौतिक अनुबंध स्थापित करने हेतु दिया गया। उनके अध्ययन जलवायु, जैव भार विलोपन तथा बाह्य परिघटना के बीच युग्मन को समझने के लिए उपयोगी अंतरदृष्टियों को प्रदान करते हैं।

डॉ. टी.आर.के. चेट्टी, वैज्ञानिक 'एफ' को मूलभूत विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2006 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें आधुनिक मानचित्रण तकनीकों को अनुप्रयुक्त करने तथा भूगतिकीय प्रक्रियाओं को समझने में उन तकनीकों की अनुप्रयुक्ति निदर्शित करने हेतु तथा भारत के कैम्ब्रियनपूर्व भूभाग की संरचना एवं विवर्तनिकी की जानकारी में इनके योगदान को ध्यान में रखकर प्रदान किया गया।

उनके अध्ययनों ने कैम्ब्रियनपूर्व गतिशील क्षेत्रों के क्रमविकास तथा अधि-महाद्वीपों के पुनःनिर्माण प्रतिरूपों में उनके सहसम्बन्ध के सम्बन्ध में नवीन विवर्तनिक संकल्पनाओं को जन्म दिया और खनिज संसाधनों की उत्पत्ति के संबंध में अंतरदृष्टि प्रदान की है।

डॉ. शकील अहमद, वैज्ञानिक 'एफ' को भूजल अन्वेषण के क्षेत्र में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2006 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान में भूजल अनुसंधान हेतु इण्डो-फ्रेंच केन्द्र (आईएफसीजीआर) स्थापित करने तथा भूजल प्रबंधन के लिए कठोर शैल जलभृतों की संरचना एवं कार्यविधि की गहरी जांच करने हेतु विशिष्ट जलभूवैज्ञानिक विधियों का विकास करने के लिए दिया गया।

डॉ. अनिल कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'को मूलभूत विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2006 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें किम्बरलाइट, कार्बोनेटाइट और मैफिक ज्वालामुखी शैल जैसे कई मैण्टल उत्पन्न शैलों के समस्थानिक संघटन का प्रयोग करके भारतीय क्रेटॉन में प्राचीन उप-महाद्वीपीय स्थलमंडलीय एवं गंभीर मैण्टल कुंडों सहित पृथ्वी के अंतर्भाग का उद्गम एवं क्रमविकास को समझने में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया।

सीएसआईओ, चण्डीगढ़ में सीपीवाईएलएस कार्यक्रम आयोजित

10वीं कक्षा के प्रतिभावान युवाओं को विज्ञान की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से विज्ञान में युवा नेतृत्व पर सीएसआईआर कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस) संगठन में 17-18 जनवरी, 2008 को आयोजित किया गया। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में हरियाणा राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों 65 विद्यार्थियों ने अपने अभिभावकों के साथ भाग लिया।

प्रो. जयरूप सिंह, कुलपति, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ने दिनांक 17 जनवरी, 2008 को कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन किया तथा **जेनेटिक्स एण्ड बर्थ डिफेक्ट्स** विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं तथा उन्हें विज्ञान का चयन वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्साहपूर्वक करना चाहिए, न कि केवल किताबी ज्ञान द्वारा डिग्री प्राप्त करने के लिए। उन्होंने अपने व्याख्यान में विविध प्रकार के आनुवंशिक रोगों एवं उनके समय पर इलाज के बारे में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया कि भारत में पैदा होने वाले 28 बच्चों में से 1 गंभीर जन्मजात रोगों से ग्रसित होता है तथा भारत में अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने ऐसी सुविधाएं विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में इस प्रकार के रोगों के लिए उपलब्ध चिकित्सा सुविधाएं अत्यन्त मंहगी हैं तथा हमें सस्ती स्वदेशी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर प्रो. सिंह ने विद्यार्थियों के विविध प्रश्नों का जवाब दिया तथा उन्हें सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए समूह बनाकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. पवन कपूर, निदेशक

प्रतिभागी विद्यार्थी निदेशक, सीएसआईओ एवं मुख्य अतिथि के साथ

सीएसआईओ ने अपने स्वागत भाषण में सीपीवाईएलएस कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला तथा युवा वर्ग में वैज्ञानिक सोच के सृजन पर बल दिया। उन्होंने पाषाण युग से लेकर सिलीकॉन युग तक के विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों व सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी जैसे नूतन विषयों की जानकारी दी।

इस कार्यक्रम में संगठन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने व्याख्यान दिए तथा विद्यार्थियों से बातचीत की और उन्हें विभिन्न अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी।

विद्यार्थीगण संगठन के एक वैज्ञानिक से चर्चा करते हुए

डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ एक विद्यार्थी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

दो दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाओं में ले जाया गया, जिससे वे जान सकें कि अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रही प्रयोगशालाएं वास्तव में कैसी दिखाई देती है और वे उन उपकरणों को देखने का अवसर प्राप्त कर सकें, जिनके विषय में उन्होंने केवल पुस्तकों में ही पढ़ा था। विद्यार्थियों ने वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं के साथ चर्चा की। संबंधित वैज्ञानिक विषयों पर फिल्मों का भी प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिभागी विद्यार्थियों के लिए एक मल्टीमीडिया विज्ञान प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई।

कार्यक्रम दिनांक 18 जनवरी, 2008 को संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. पवन कपूर निदेशक, सीएसआईओ ने विद्यार्थियों से कहा कि सीएसआईओ में आपका सदैव स्वागत है तथा आप सीएसआईओ से केवल एक ईमेल की दूरी पर हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को हर प्रकार की सहायता एवं मार्गदर्शन का विश्वास दिलाया। निदेशक, सीएसआईओ ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न भी भेंट किए।

कार्यक्रम श्री आर.सी. अरोड़ा, वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।

मधुमेह प्रतिरोधी पौधों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (एनईआईएसटी), जोरहाट ने मधुमेह से सम्बन्धित अनुसंधान में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी ढाका, बांग्लादेश स्थित मधुमेह प्रतिरोधी पौधों यानी एन्टी-डायबेटिक प्लान्ट्स (ANRAP) के अनुसंधान की एशियाई शाखा के संयुक्त प्रयासों से **प्लान्ट्स इन डायबिटीजः- प्रोस्पेक्ट्स एण्ड चैलेंजेज** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी में एनईआईएसटी के वैज्ञानिक समुदाय के अतिरिक्त बांग्लादेश तथा भारत के बहुत से वैज्ञानिकों ने भाग लिया। भाग लेने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. लियाक़त अली, प्रोफेसर, जैवरासायनिकी तथा कोशिका जीवविज्ञान, बीआईआरडीईएम तथा डॉ. बिस्वानाथ मुखर्जी, सदस्य एएनआरएपी बोर्ड ऑफ इंडिया प्रमुख थे।

एयर कमाडोर वी.केशवराव, वीएसएम, एओसी 5वां एयरफोर्स हॉस्पीटल, जोरहाट उद्घाटन समारोह के प्रमुख अतिथि थे जिन्होंने उद्घाटन व्याख्यान दिया तथा डॉ. पी.जी.राव, निदेशक, एनईआईएसटी ने अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

यह संगोष्ठी देश में अपनी किस्म की पहली संगोष्ठी है क्योंकि अभी तक आयोजित संगोष्ठयों की श्रृंखला में जो विषय समाहित किये गये थे, उनमें से अधिकतर बांग्लादेश की सीमाओं तक ही सीमित थे। परन्तु आजकल मधुमेह एक विश्वव्यापी समस्या बन गया है तथा विश्व के अन्य भागों में भी इसी प्रकार संगोष्ठी आयोजित करने की तत्काल आवश्यकता है।

चूंकि भारत को मधुमेह का केन्द्र माना जा रहा है इसलिए एएनआरएपी ने बांग्लादेश के बाहर भी संगोष्ठी आयोजित करना आरम्भ किया तथा एनईआईएसटी, जोरहाट को संगोष्ठी आयोजित करने के लिए चुना।

अपने स्वागत सम्बोधन में मुख्य अतिथि ने रोग के खतरों यथा हृदय रोग, गुर्दा, अन्धापन, यकृत रोग इत्यादि के विषय में विस्तार से बताया तथा विश्वभर में इनकी संख्या भयावह रूप से कैसे बढ़ रही है, के विषय में निर्दिष्ट किया।

उन्होंने इन रोगों के उपचार के लिए नवीन तथा और अधिक प्रभावशाली औषधियों को खोजने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. लियाकत अली ने ढाका में वर्ष 1988 में एएनआरएपी की उत्पत्ति तथा इसके उद्देश्यों तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के मधुमेह पीड़ित रोगियों पर डेटाबेस विकसित करने तथा मधुमेह रोग को नियंत्रित करने के नवीन पादप स्रोतों की खोज करने के महत्व पर चर्चा की। चूंकि पूर्वोत्तर भारत औषधीय पौधों का एक दुर्लभ केन्द्र है इसलिए उन्होंने यह अनुभव किया कि भारत के इस भाग में अनुसंधान नवीन मधुमेह प्रतिरोधी पादप स्रोतों खोज के लिए प्रेरित करेगा।

डॉ. बिस्वानाथ मुखर्जी ने भारत में मधुमेह की समस्या पर चर्चा की। उन्होंने विशेष रूप से इस जटिल समस्या पर चर्चा की और इस जटिल समस्या की रोकथाम तथा नियंत्रण पर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. पी.जी.राव, निदेशक, एनईआईएसटी ने एनईआईएसटी-जोरहाट की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रयोगशाला औषधीय तथा संगंध पादपों, पादप रसायन विज्ञान, नवीन जैवसक्रिय अणुओं तथा फार्माकोलोजिकल अध्ययन के लिए नेटवर्क परियोजना इत्यादि पर बहुआयामी अनुसंधान कार्यक्रम हो रहे हैं।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में विभाजित यह सम्मेलन अनिवार्य रूप से विषय विशेष पर भारत तथा बांग्लादेश दोनों ही देशों के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्कों की एक बैठक थी।

जावा सिट्रोनेला तथा वर्मीकम्पोस्ट पर प्रशिक्षण

बीटीएडी में संगंध पौधों से तेल निष्कर्षण का प्रदर्शन

पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (एनईआईएसटी), जोरहाट की इटानगर अरुणाचल प्रदेश में कुरुंग कुम जिले की रिंगटे डेनी सोसायटी के साथ संयुक्त रूप से **जावा सिट्रोनेला** की खेती तथा कृमि खाद के उत्पादन पर एकदिवसीय जागरुकता-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम डीएसटी द्वारा निधित्व परियोजना के अन्तर्गत आयोजित किया गया। लगभग 80 महिलाओं तथा तीन पुरुष प्रतिभागी जो रिंगटे डेनी सोसायटी, पालीन के अन्तर्गत विभिन्न एसएचजी से सम्बन्धित हैं, ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रतिभागियों के आर्थिक लाभ के लिए **सिट्रोनेला** की कृषि तकनीक का प्रदर्शन किया गया।

एनईआईएसटी ने सोसायटी के माध्यम से एसएचजी को 5000 **सिट्रोनेला** प्ररोह भी रोपण के लिए वितरित किये। अगले रोपण मौसम में और अधिक रोपण सामग्री का वितरण किया जाएगा। भविष्य के लिए अरुणाचल प्रदेश में पालीन तथा अन्य निकटतम ग्रामों की ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने में सहायता के द्वारा पालीन तथा अन्य स्थानों के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए एनईआईएसटी तथा अन्य सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित ग्रामीण प्रौद्योगिकियों यथा कम धूलवाली चाक, लिक्विड, डियोडोरेन्ट क्लीनर, मोल्डेड लीफ कप/प्लेट बनाने की मशीन इत्यादि के विषय में जानकारी इस क्षेत्र के लोगों को देने के लिए एनईआईएसटी शाखा सक्रिय रूप से कार्यरत है।

डॉ. टी.आर.के. चेट्टी को अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार

डॉ. टी.आर.के. चेट्टी, वैज्ञानिक 'एफ' राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद को इन्टरनेशनल एन्डेवर प्रोग्राम के अन्तर्गत आस्ट्रेलियाई सरकार के शिक्षा, विज्ञान तथा प्रशिक्षण विभाग द्वारा वर्ष 2008 का एन्डेवर एक्जीक्यूटिव अवार्ड के लिए चुना गया है। एक अन्तरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा तथा विशेष दक्षता पर आधारित छात्रवृति के रूप में यह आस्ट्रेलियाई सरकार के 1.4 बिलियन डॉलर की छात्रवृति पहल का एक भाग है।

डॉ. चेट्टी ने हीरा अन्वेषण, विस्तृत भू प्रक्रियाओं तथा जियोडायनामिक मॉडलिंग के संबंध में बहुत से उत्कृष्ट योगदान दिये हैं। उन्होंने आन्ध्र प्रदेश के वेन्काटेम्पल, अनन्तपुर जिले में हीरे से भरपूर किम्बरलाइट की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे वर्ष 1974 से एनजीआरआई में कार्यरत हैं। वे 100 से भी अधिक अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशनों के लेखक हैं तथा उन्होंने बहुत से पीएचडी विद्यार्थियों का भी मार्गदर्शन किया है। उन्होंने बहुत से अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोगात्मक कार्यक्रमों को आरम्भ किया है तथा प्रथम अन्तरराष्ट्रीय भूभौतिकीय क्षेत्र कार्यशाला का भी आयोजन किया जिसमें अमेरिका, जर्मनी तथा आस्ट्रेलिया के विभिन्न शीर्ष वैज्ञानिकों का प्रतिनिधित्व डॉ. चेट्टी ने किया। वे इन्सा रॉयल सोसायटी फैलोशिप, एपी एकेडमी ऑफ सांइसेज फैलोशिप, सीएसआईआर, डीएएडी सीनियर फैलोशिप के प्राप्तकर्ता हैं तथा इन्टरनेशनल एसोसियेशन ऑफ गॉडवाना रिसर्च, जापान के सचिव भी हैं। इस वर्ष उन्हें खान विभाग भारत सरकार के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार, वर्ष 2006 के लिए चुना गया है।

सीएसआईओ, चण्डीगढ़ में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ में दिनांक 19-20 फरवरी 2008 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ के सहयोग से दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में चण्डीगढ़ स्थित केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के 30 प्रतिभागियों तथा सीएसआईओ, चण्डीगढ़ के 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन डॉ. यश गुलाटी, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय तथा वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार एवं वर्तमान में दैनिक भास्कर के संपादकीय सलाहकार ने किया। डॉ. यश गुलाटी ने ऐसी कार्यशालाओं को अनुभव बांटने का मंच बताते हुए इसके सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि आपसी अनुभवों को बांटकर ही हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपना कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करें, न कि अनुवाद के माध्यम से हिन्दी तक पहुंचे।

श्री ए.के. डिमरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईओ ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा प्रतिभागियों का सीएसआईओ में औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला हिन्दी के अधिकाधिक अनुप्रयोग की दिशा में कारगर सिद्ध होगी।

दो दिवसीय इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, टिप्पण एवं प्रारूपण, कम्प्यूटर पर हिन्दी अनुप्रयोग, संसदीय समिति एवं निरीक्षण प्रश्नावली, हिन्दी की तिमाही रिपोर्ट, हिन्दी वर्तनी तथा हिन्दी एवं सकारात्मक सोच विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

इस अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ के सदस्य सचिव डॉ. सुरेन्द्र शर्मा भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यक्रम के अन्त में प्रमाणपत्र वितरित किए।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र पर मंच का एक दृश्य बाएं से - सुश्री नीरू डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. यश गुलाटी एवं श्री अलोक मुखर्जी

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/ जनसम्पर्क अधिकारियों/ हिन्दी अधिकारियों/ अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/ सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/ सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर, समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक,
सीएसआईआर समाचार
ईमेलः
deeksha@niscair.res.in

निस्केयर
उपलब्ध कराता है आपकी आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान आधारित सेवाएं

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), सीएसआइआर
वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचना प्रबंधन प्रणाली तथा सेवाओं का नेतृत्व करने वाला प्रामाणिक संस्थान है

- औषधीय एवं सगंध पादप सूचना सेवा - वैल्थ ऑफ इंडिया तथा मापा डेटाबेसों पर आधारित सेवा।अनुसंधानकर्ताओं, उद्यमियों, उद्योगपतियों, कृषकों तथा सरकारी एजेन्सियों के लिए एक आदर्श सेवा।
- **पहचान सेवा** - औषधीय महत्व के पादपों/अपरिष्कृत औषध सामग्री की पहचान के लिए।
- **कन्टेंट्स, एब्सट्रैक्ट्स एवं फोटोकापी सेवा** - आवश्यकता आधारित।
- **साहित्य खोज सेवा** - 6000 से अधिक अन्तरराष्ट्रीय डेटाबेसों पर सुलभता।
- **वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुवाद सेवा** - जापानी, जर्मनी, फ्रांसीसी, स्पेनी, चीनी तथा रूसी भाषा से अंग्रेजी में।
- **बिबलियोमेट्रिक सेवाएं** - विशिष्ट विषयों के लिए।
- **परामर्शक सेवाएं** - अभिकल्पन, संपादन तथा प्रकाशन।
- पुस्तकालय पुनर्गठन/स्वचलन/आधुनिकीकरण।
- डेटाबेस अभिकल्पन तथा विकास।
- उत्कृष्ट ग्राफिक आर्ट, प्रोडक्शन तथा मुद्रण सुविधाएं।

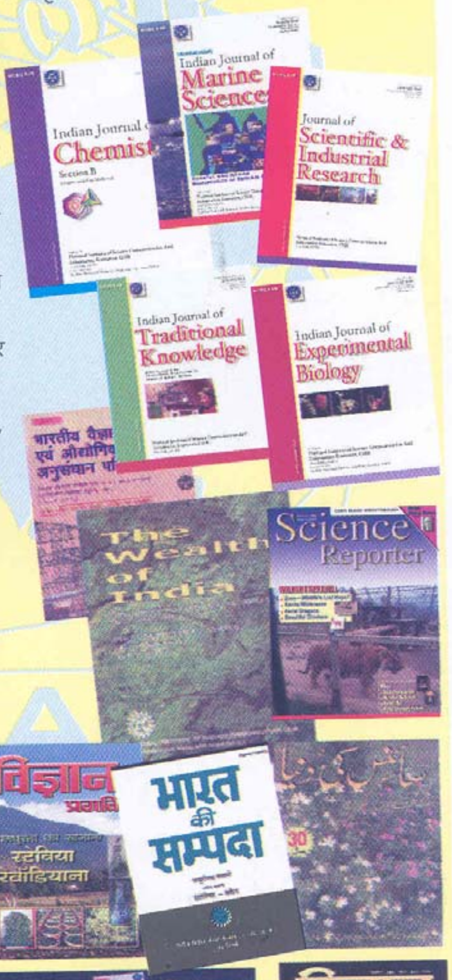

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- एसोसियेटशिप इन इन्फॉर्मेशन सांइस (एआइएस)
- अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम - सूचना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी/ कम्प्यूटर अनुप्रयोग/ तकनीकी लेखन/ हर्बेरियम तकनीकें।

अधिक जानकारी लिए सम्पर्क करें -
निदेशक
राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
निस्केयर,
*डॉ.के.एस.कृष्णन् मार्ग,नई दिल्ली-110 012 एवं
सत्संग विहार मार्ग,नई दिल्ली-110 067
ई मेल:director@niscair.res.in
दूरभाष:*25846024,*25848385, 26517059
फैक्स: *25847062, 26862228

डॉ. अभिताभ चट्टोपाध्याय को रेनबैक्सी अनुसंधान अवार्ड 2006 के लिए चुना गया

डॉ. अभिताभ चट्टोपाध्याय, उपनिदेशक, कोशिकीय तथा आण्विकजीवविज्ञान केन्द्र (सीसीएमबी), हैदराबाद को जी प्रोटीन युग्म अभिग्राहक के गठन तथा कार्य प्रणाली में झिल्ली वसा की भूमिका तथा स्वास्थ्य व रोग में इसके प्रभाव पर महत्वपूर्ण योगदान के लिए चिकित्सा विज्ञान में मौलिक अनुसंधान के लिए प्रतिष्ठित रैनबैक्सी अनुसंधान पुरस्कार के लिए चुना गया है।

उनका दल जैवरसायन, जैवभौतिकी तथा कोशिका जैविक उपागम्यता के बौद्धिक उपयोग द्वारा सेरोटोनिन IA(5-HT_{IA}) रिसेप्टर के गठन तथा कार्यप्रणाली पर मेम्ब्रेन कोलेस्टेरॉल की महत्वपूर्ण आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाला पहला दल था। उनके द्वारा हाल ही में किये गये शोध इस महत्वपूर्ण न्यूरोट्रांसमीटर रिसेप्टर(सेरोटोनिन$_{IA}$ रिसेप्टर) की कार्यप्रणाली को दर्शाते हैं जो स्मिथ लेमली ऑपिट्ज सिंड्रोम (SLOS) है जिसमें कोलेस्टेरॉल जैवसंश्लेषण दोषपूर्ण हो जाता है, में क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। यह बड़ी रोमांचक बात है कि डॉ. चट्टोपाध्याय का दल ही वह प्रथम समूह था जिसने सर्वप्रथम परजीवी **लीशमेनिया डॉनोवानी** द्वारा फैलाए गए संक्रमण, जिसके कारण लीशमेनिएसिस रोग हो जाता है, की प्रक्रिया में होस्ट मेम्बरेन कॉलेस्टेरॉल के महत्वपूर्ण भूमिका के विषय में बताया।

डॉ. अभिताभ चट्टोपाध्याय ने दल प्रमुख के रूप में वर्ष 1989 में सीसीएमबी में कार्यभार ग्रहण किया तथा अब तक उनके 120 से भी अधिक शोधपत्र पीयर रिव्यूड राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा वे पांच पुस्तकों का संपादन व समीक्षा भी कर चुके हैं। उन्हें जैविक विज्ञान में उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कारों यथा शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, रमन रिसर्च फैलोशिप तथा डोजर विजिटिंग फैलो (इजराइल) जैसे कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। वे तीनों भारतीय विज्ञान अकादमियों के फैलो होने के साथ-साथ बहुत सी प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं के सम्पादक मंडल के सदस्य भी हैं।

डॉ. शिवेन्द्रनाथ राय हाइड्रोजिलॉजी जर्नल के सह संपादक के रूप में नामित

डॉ. शिवेन्द्रनाथ राय, उपनिदेशक, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को हाइड्रोजिलॉजिस्ट्स जर्नल जो अंतरराष्ट्रीय जल-वैज्ञानिक संघ [इंटरनेशनल एसोशिएशन ऑफ हाइड्रोजिलॉजिस्ट्स (आई.ए.एच.)] का आधिकारिक जर्नल है, के सहसंपादक के रूप में नामित किया गया। आई.ए.एच. भूजल संसाधन आयोजना, प्रबंधन एवं संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों, अभियंताओं तथा अन्य व्यावसायिकों का अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसमें 130 से भी अधिक देशों के लगभग 4000 सदस्य हैं। डॉ. राय सन् 2004 से इस संघ के उपाध्यक्ष हैं और 7-12 सितम्बर 2009 के दौरान हैदराबाद में आयोजित होने वाले उसके 37वें सम्मेलन के नामोद्दिष्ट संयोजक भी हैं। आई.ए.एच. सम्मेलन कठोर शैल प्रदेश के भूजल संसाधनों का सतत विकास एवं प्रबंधन विषय पर संयुक्त रूप से अन्तरराष्ट्रीय जलविज्ञान संघ (इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोलॉजिकल साइंसेस) की 8वीं वैज्ञानिक सभा के साथ आयोजित किया जाएगा।

डॉ. राय की अनुसंधान अभिरुचि भूजल प्रवाह तथा भूतापीय प्रतिरूपण के क्षेत्रों में है। उन्होंने 60 शोधपत्र प्रकाशित किए। वे **डायनामिक्स ऑफ एर्थस फ्लुइड सिस्टम** शीर्षक पुस्तक तथा प्रकाशनाधीन पुस्तक **सस्टेनेबल डेवलेपमेंट एण्ड मैनेजमेंट ऑफ ग्राउण्ड वॉटर रिसोर्सेज़ इन सेमि-एरिड रीजन विद स्पेशल रिफरेन्स टु हार्ड रॉक्स** के संपादक हैं। दोनों पुस्तकें ए.ए.बालकेमा द्वारा प्रकाशित की गई हैं। उनको जलविज्ञान के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिए 1993 में इंडियन एसोशिएशन ऑफ हाइड्रोलॉजिस्ट्स द्वारा राष्ट्रीय जलविज्ञान पुरस्कार प्रदान किया गया। वे डीएएडी, इंडियन एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोलॉजिस्ट्स तथा इंडियन जियोफिज़िकल यूनियन के अध्येता हैं। इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोलॉजिकल साइंसेज एवं एसोसिएशन ऑफ एक्सप्लोरेशन जियोफिज़िक्स के सदस्य भी हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए एस.के. रस्तोगी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा

फोनः 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्रामः PUBLIFORM. New Delhi; फैक्सः 25847062

ई-मेलः csirsamachar@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें